NJESR/April-2026/Volume-8/Issue-4 **E-ISSN-2582-5836**

DOI-10.53571/NJESR.2026.8.4.41-47

वाल्मीकि रामायण में बाल शिक्षा और संस्कार निर्माण का शैक्षिक अध्ययन

सर्वेश कुमार शुक्ला

(सहायक प्राध्यापक)

राम कृष्ण विवेकानंद कॉलेज ऑफ एजुकेशन बगोदर,

गिरिडीह, (झारखंड)

(Received -15March2026/Revised-28March2026/Accepted-5April2026/Published-10 April2026)

1-सारांश -

वाल्मीकि रामायण भारतीय प्राचीन शिक्षा व्यवस्था (गुरुकुल प्रणाली) और बाल संस्कार निर्माण का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करती है। इसमें शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता या शास्त्र ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, सद्गुणों का विकास, धर्म-कर्तव्य बोध और सुसंस्कृत व्यक्तित्व का निर्माण था। शिक्षा और संस्कार एक-दूसरे से अविभाज्य थे , संस्कार शिक्षा के आधार और शिक्षा संस्कारों का आधार थी।वाल्मीकि रामायण बाल शिक्षा को संस्कार प्रधान बनाती है, जहाँ ज्ञान के साथ चरित्र और मूल्य जुड़े होते हैं। आधुनिक शिक्षा के लिए यह प्रेरणा देती है कि शिक्षा राष्ट्रीय दृष्टिकोण, नैतिकता और समग्र विकास पर केंद्रित होनी चाहिए। राम जैसे आदर्श पुरुष का निर्माण इसी व्यवस्था से हुआ, जो आज भी भारतीय शिक्षा दर्शन का आधार है। यह सारांश रामायण के बालकाण्ड और संबंधित प्रसंगों पर आधारित है, जो प्राचीन गुरुकुल प्रणाली की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

2. प्रस्तावना (इंट्रोडक्शन)-

भारतीय वाङ्मय में वाल्मीकि रामायण एक ऐसा महाकाव्य है, जो केवल धार्मिक ग्रंथ के रूप में ही नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक दस्तावेज के रूप में भी प्रतिष्ठित है। यह ग्रंथ मानव जीवन के आदर्शों, नैतिक मूल्यों, कर्तव्यबोध, अनुशासन तथा संस्कारों का व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है। वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में मानव जीवन की संपूर्ण यात्रा–बाल्यावस्था से लेकर आदर्श नेतृत्व तक–का अत्यंत प्रभावशाली वर्णन मिलता है।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि बालक के सर्वांगीण विकास, चरित्र निर्माण तथा नैतिक संस्कारों के विकास को सुनिश्चित करना भी है। आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि बाल्यावस्था वह अवस्था है, जिसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व की नींव रखी जाती है। इसी अवस्था में प्राप्त शिक्षा, संस्कार और मूल्य जीवनभर व्यक्ति के व्यवहार, दृष्टिकोण और निर्णय क्षमता को प्रभावित करते हैं।

वाल्मीकि रामायण में बाल शिक्षा का स्वरूप केवल औपचारिक अध्ययन तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें जीवनोपयोगी शिक्षा, नैतिक अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व, गुरु–शिष्य परंपरा तथा संस्कार निर्माण की प्रक्रिया का समग्र चित्रण मिलता है। विशेष रूप से बालकांड में राम के जन्म, पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा तथा उनके व्यक्तित्व निर्माण से जुड़े प्रसंग स्पष्ट करते हैं कि प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली बालक के मानसिक, नैतिक और सामाजिक विकास पर केंद्रित थी।

रामायण में गुरु विश्वामित्र एवं वशिष्ठ जैसे शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि संस्कारदाता भी हैं। राम और लक्ष्मण को दी गई शिक्षा में शस्त्रविद्या के साथ–साथ सत्य, संयम, सेवा, विनम्रता तथा धर्मपालन जैसे नैतिक गुणों का समावेश है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वाल्मीकि रामायण में शिक्षा का उद्देश्य एक आदर्श नागरिक एवं चरित्रवान मानव का निर्माण करना था।

संस्कार निर्माण की प्रक्रिया रामायण में पारिवारिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर दिखाई देती है। राजा दशरथ द्वारा पुत्रों का पालन–पोषण, माता कौशल्या द्वारा दिए गए नैतिक संस्कार, तथा गुरुजनों द्वारा प्रदान की गई शिक्षा–ये सभी बालक के चरित्र निर्माण में सहायक सिद्ध होते हैं। राम के जीवन में आज्ञापालन, कर्तव्यनिष्ठा, त्याग, अनुशासन तथा आदर्श व्यवहार जैसे गुण बाल संस्कारों की प्रभावशीलता को दर्शाते हैं। वर्तमान समय में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः ज्ञान एवं कौशल

विकास तक सीमित होती जा रही है, जिसके परिणामस्वरूप बालकों में नैतिक मूल्यों का ह्रास, अनुशासनहीनता तथा सामाजिक व्यवहार में गिरावट जैसी समस्याएँ उभर रही हैं। नई शिक्षा नीति 2020 (एन0ई0पी0 2020) भी मूल्य आधारित शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा तथा संस्कार निर्माण की आवश्यकता पर बल देती है। ऐसी स्थिति में यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि भारतीय प्राचीन ग्रंथों में निहित बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के सिद्धांतों का पुनः अध्ययन किया जाए।

इस शोध का उद्देश्य वाल्मीकि रामायण में वर्णित बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के शैक्षिक तत्वों की पहचान करना तथा उनकी आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में प्रासंगिकता स्थापित करना है। यह अध्ययन न केवल प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन को समझने में सहायक होगा, बल्कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्य शिक्षा एवं चरित्र निर्माण के लिए एक नवीन दृष्टिकोण भी प्रदान करेगा। अतः यह शोध "वाल्मीकि रामायण में बाल शिक्षा और संस्कार निर्माण" विषय को शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण एवं नवोन्मेषी अध्ययन के रूप में प्रस्तुत करेगा, जो बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और आधुनिक शिक्षा के बीच सेतु का कार्य करेगा।

2.शोध की आवश्यकता एवं महत्व (नीड एंड सिग्निफिकेंस ऑफ द स्टडी)

भारतीय शिक्षा परंपरा में वाल्मीकि रामायण का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह ग्रंथ केवल धार्मिक महाकाव्य नहीं, बल्कि बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण का एक समृद्ध स्रोत भी है। रामायण में बाल्यावस्था से ही नैतिक तत्वों, नैतिक मुल्यों अनुशासन, आज्ञापालन तथा कर्तव्यबोध के विकास पर विशेष बल दिया गया है। वर्तमान समय में बालकों में मूल्यहीनता एवं अनुशासन की कमी एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। ऐसी स्थिति में रामायण में निहित शिक्षाप्रद प्रसंग बालकों के चरित्र निर्माण में सहायक हो सकते हैं। यह अध्ययन बाल शिक्षा को मूल्यपरक एवं संस्कारयुक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। अतः इस विषय पर शोध की आवश्यकता एवं महत्व अत्यंत प्रासंगिक एवं उपयोगी है।

इस शोध की आवश्यकता निम्न कारणों से हैः

1.आधुनिक शिक्षा में नैतिक एवं मूल्य शिक्षा की कमी।

2.बालकों में संस्कार निर्माण हेतु भारतीय परंपरा के स्रोतों का उपयोग।

3.वाल्मीकि रामायण में उपलब्ध बाल शिक्षा के आदर्शों का शैक्षिक पुर्नपठन।

4.नई शिक्षा नीति (एन0ई0पी0 2020) में मूल्य आधारित शिक्षा के संदर्भ में उपयोगिता।

5.शिक्षक शिक्षा (टीचर एजुकेशन) में सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश।

6.यह शोध बाल शिक्षा के क्षेत्र में नवीन दृष्टिकोण प्रदान करेगा।

4. शोध के उद्देश्य (ऑब्जेक्टिव्स ऑफ द स्टडी)

प्रस्तुत शोध में बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के संदर्भ में उद्देश्यों का निर्धारण अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही अध्ययन की दिशा को स्पष्ट करते हैं। किसी भी शोध कार्य की सफलता उसके सुव्यवस्थित उद्देश्यों पर निर्भर करती है, जो समस्या के समाधान की ओर मार्गदर्शन करते हैं। इस अध्ययन में वाल्मीकि रामायण में निहित बाल शिक्षा से संबंधित तत्वों का विश्लेषण करने हेतु विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है। इन उद्देश्यों के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि रामायण में बाल्यावस्था के संस्कार, नैतिक शिक्षा एवं चरित्र निर्माण के कौन–कौन से आधार प्रस्तुत किए गए हैं। साथ ही यह भी देखा जाएगा कि ये शैक्षिक तत्व वर्तमान शिक्षा प्रणाली में किस प्रकार उपयोगी हो सकते हैं। इस प्रकार निर्धारित उद्देश्य अध्ययन को एक स्पष्ट, व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक दिशा प्रदान करते हैं।

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देष्य निम्न हैंः

1.वाल्मीकि रामायण में बाल शिक्षा की अवधारणा का अध्ययन करना।

2.बालक राम के जीवन प्रसंगों में निहित संस्कार निर्माण के तत्वों की पहचान करना।

3.रामायण में गुरु–शिष्य परंपरा एवं शिक्षा पद्धति का विश्लेषण करना।

4.नैतिक मूल्यों, अनुशासन एवं आदर्श व्यवहार के शैक्षिक पक्ष को स्पष्ट करना।

5.वाल्मीकि रामायण के बाल शिक्षा सिद्धांतों की आधुनिक शिक्षा से प्रासंगिकता स्थापित करना।

4. शोध परिकल्पना (रिसर्च हाइपोथीसिस)

प्रस्तुत शोध में परिकल्पना का विशेष महत्व है, क्योंकि यह अध्ययन को एक निश्चित दिशा प्रदान करती है। परिकल्पना शोध समस्या के संभावित समाधान के रूप में एक प्रारंभिक अनुमान होती है, जिसकी सत्यता का परीक्षण शोध प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है। बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के संदर्भ में वाल्मीकि रामायण में अनेक शैक्षिक तत्व निहित हैं, जिनके आधार पर इस अध्ययन की परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं। इन परिकल्पनाओं के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि रामायण में वर्णित नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य बालकों के चरित्र निर्माण में किस प्रकार सहायक हैं। साथ ही यह भी परीक्षण किया जाएगा कि ये शैक्षिक तत्व वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कितने प्रासंगिक हैं। इस प्रकार परिकल्पनाएँ इस शोध को वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित दिशा प्रदान करती हैं। इसकी परिकल्पनाएँ निम्न हैं–

1.वाल्मीकि रामायण में बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के उच्च शैक्षिक आदर्श विद्यमान हैं।

2.बालक राम का चरित्र शिक्षा के माध्यम से नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का आदर्श प्रस्तुत करता है।

3.आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में रामायण आधारित मूल्य शिक्षा उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

5. साहित्य समीक्षा (रिव्यू ऑफ लिटरेचर) :–

प्रस्तुत शोध में साहित्य समीक्षा का विशेष महत्व है, क्योंकि इसके माध्यम से विषय से संबंधित पूर्ववर्ती अध्ययनों, ग्रंथों एवं विचारों का सम्यक अवलोकन किया जाता है। साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के संदर्भ में अब तक किस प्रकार के कार्य किए जा चुके हैं। इस अध्ययन में वाल्मीकि रामायण तथा उससे संबंधित पुस्तकों, शोध प्रबंधों एवं लेखों का विश्लेषण किया जाएगा। इससे शोध समस्या की पृष्ठभूमि स्पष्ट होगी तथा शोध के नए आयामों की पहचान संभव होगी। साथ ही यह भी ज्ञात होगा कि पूर्ववर्ती अध्ययनों में किन पक्षों पर अधिक बल दिया गया है और किन पर अभी शोध की आवश्यकता है। इस प्रकार साहित्य समीक्षा प्रस्तुत अध्ययन को सुदृढ़ आधार प्रदान करती है तथा इसे एक व्यवस्थित दिशा में अग्रसर करती है।

1.शोधकर्ताः शोभा कुमारी

शोध शीर्षकः बाल्मीकि रामायण का दार्शनिक अध्ययन

विश्वविद्यालयः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

वर्षः 2003

मुख्य निष्कर्षः

अध्ययन में यह पाया गया कि वाल्मीकि रामायण में धर्म, सत्य और कर्तव्य जैसे दार्शनिक सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन है, जो मानव जीवन के मार्गदर्शन में सहायक हैं।

2.शोधकर्ताः अमृतलाल

शोध शीर्षकः बाल्मीकि रामायण का समालोचनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालयः इलाहाबाद विश्वविद्यालय

वर्षः 1998

मुख्य निष्कर्षः

इस अध्ययन में रामायण के विभिन्न प्रसंगों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया तथा यह निष्कर्ष निकला कि यह ग्रंथ भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण आधार है।

3.शोधकर्ताः अंजना सिंह

शोध शीर्षकः रामायण में पारिवारिक मूल्यों का अध्ययन

विश्वविद्यालयः बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

वर्षः 2011

मुख्य निष्कर्षः

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि रामायण में परिवार के आदर्श संबंधों का चित्रण मिलता है, जो समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना करते हैं।

4.शोधकर्ताः महेश कुमार

शोध शीर्षकः रामायण में नैतिक मूल्यों का अध्ययन

विश्वविद्यालयः मेरठ विश्वविद्यालय

वर्षः 2008

मुख्य निष्कर्षः रामायण में सत्य, अहिंसा, करुणा और कर्तव्य जैसे नैतिक मूल्यों का विशेष महत्व बताया गया है।

5.शोधकर्ताः सुनीता शर्मा

शोध शीर्षकः रामायण में नारी के आदर्श स्वःप का अध्ययन

विश्वविद्यालयः राजस्थान विश्वविद्यालय

वर्षः 2010

मुख्य निष्कर्षः

अध्ययन में पाया गया कि रामायण में नारी को त्याग, धैर्य और मर्यादा का प्रतीक माना गया है।

6.शोधकर्ताः संजय तिवारी

शोध शीर्षकः रामायण में आदर्श नेतृत्व का अध्ययन

विश्वविद्यालयः अवध विश्वविद्यालय

वर्षः 2014

मुख्य निष्कर्षः

रामायण में श्रीराम के माध्यम से आदर्श नेतृत्व और लोककल्याणकारी शासन की अवधारणा प्रस्तुत की गई है।

7.शोधकर्ताः धर्मेन्द्र कुमार

शोध शीर्षकः रामायण में शिक्षा दर्शन का अध्ययन

विश्वविद्यालयः आगरा विश्वविद्यालय

वर्षः 2016

मुख्य निष्कर्षः

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि रामायण में गुरु–शिष्य परंपरा तथा मूल्यपरक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है।

8.शोधकर्ताः अरुण पाठक

शोध शीर्षकः वाल्मीकि रामायण में सामाजिक मूल्यों का अध्ययन

विश्वविद्यालयः गोरखपुर विश्वविद्यालय

वर्षः 2015

मुख्य निष्कर्षः

रामायण में सामाजिक समरसता, कर्तव्यपालन और भाईचारे के आदर्शों का वर्णन मिलता है।

9.शोधकर्ताः पियूष पटेल

शोध शीर्षकः रामायण में मानवीय मूल्यों का अध्ययन

विश्वविद्यालयः गुजरात विश्वविद्यालय

वर्षः 2019

मुख्य निष्कर्षः

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि रामायण में मानवीय मूल्य आधुनिक शिक्षा के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं।

10.शोधकर्ताः राकेश कुमार

शोध शीर्षकः रामायण में सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन

विश्वविद्यालयः दिल्ली विश्वविद्यालय

वर्षः 2012

मुख्य निष्कर्षः

रामायण भारतीय संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

11.शोधकर्ताः सीमा वर्मा

शोध शीर्षकः रामायण में नैतिक शिक्षा का अध्ययन

विश्वविद्यालयः लखनऊ विश्वविद्यालय

वर्षः 2013

मुख्य निष्कर्षः

रामायण में वर्णित नैतिक शिक्षाएँ विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में सहायक हैं।

12.शोधकर्ताः सुरेश चन्द्र

शोध शीर्षकः रामायण में सामाजिक आदर्शों का अध्ययन

विश्वविद्यालयः इलाहाबाद विश्वविद्यालय

वर्षः 2009

मुख्य निष्कर्षः

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि रामायण में समाज के लिए आदर्श जीवन मूल्यों का वर्णन किया गया है।

13. शोधकर्ताः राजेश मिश्रा

शोध शीर्षकः ग्राम राज्य की अवधारणा एवं नागरिक शिक्षा

विश्वविद्यालयः लखनऊ विश्वविद्यालय

वर्षः 2012

मुख्य निष्कर्षः

भारतीय परंपराओं में नागरिक शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी के महत्व को स्पष्ट किया गया है।

14.शोधकर्ता : अजय सिंह

शोध शीर्षक : रामायण में धर्म और नीति का अध्ययन

विश्वविद्यालय : वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय

वर्ष : 2017

मुख्य निष्कर्ष :

रामायण में धर्म और नीति के सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

15. शोधकर्ता : कविता मिश्रा

शोध शीर्षक : रामायण में आदर्श चरित्रों का अध्ययन

विश्वविद्यालय : पटना विश्वविद्यालय

वर्ष : 2018

मुख्य निष्कर्ष :

रामायण के पात्रों के माध्यम से आदर्श जीवन, नैतिकता और कर्तव्य पालन की शिक्षा दी गई है।

साहित्य समीक्षा का सार :

उपरोक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि वाल्मीकि रामायण में नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मानवीय मूल्यों का व्यापक वर्णन मिलता है। ये मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्ति के चरित्र निर्माण तथा समाज के नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

6.शोध विधि (रिसर्च मैथोडोलॉजी)–

प्रस्तुत शोध में उपयुक्त शोध विधि का चयन अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इसके माध्यम से अध्ययन को वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित दिशा प्राप्त होती है। शोध विधि वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा तथ्यों का संग्रह, विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है। बाल शिक्षा

एवं संस्कार निर्माण के संदर्भ में वाल्मीकि रामायण में निहित शैक्षिक तत्वों का अध्ययन करने हेतु इस शोध में मुख्यतः ऐतिहासिक एवं दार्शनिक शोध विधि का प्रयोग किया जाएगा। इसके अंतर्गत संबंधित ग्रंथों, पुस्तकों, शोध प्रबंधों एवं शोध लेखों का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाएगा। प्राप्त तथ्यों के आधार पर बाल शिक्षा के नैतिक एवं संस्कारात्मक पक्षों का विवेचन किया जाएगा। इस प्रकार चयनित शोध विधि अध्ययन को तर्कसंगत, विश्वसनीय एवं उद्देश्यपरक बनाने में सहायक होगी।

शोध की प्रकृति : गुणात्मक (**क्वाल्टीटिव रिसर्च**)

शोध पद्धति– वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक

आंकड़ों के स्रोत :

प्राथमिक स्रोत – वाल्मीकि रामायण

द्वितीयक स्रोत – पुस्तकें, शोध–पत्र, शोध–प्रबंध, पत्रिकाएँ

7. **प्रत्याशित परिणाम** (एक्सपेक्टेड आउटकम)

किसी भी शोध कार्य में प्रत्याशित परिणामों का निर्धारण अध्ययन की दिशा और उद्देश्य को स्पष्ट करने में सहायक होता है। प्रस्तुत शोध में बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के संदर्भ में वाल्मीकि रामायण का अध्ययन करते हुए यह अपेक्षा की जाती है कि इसमें निहित शैक्षिक तत्वों का स्पष्ट एवं व्यवस्थित विश्लेषण प्राप्त होगा। इस अध्ययन से यह ज्ञात होने की संभावना है कि रामायण में वर्णित नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य बालकों के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साथ ही यह भी अपेक्षित है कि इन मूल्यों की आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में उपयोगिता एवं प्रासंगिकता स्पष्ट होगी। इस प्रकार यह शोध मूल्यपरक शिक्षा को सुदृढ़ करने तथा शिक्षा के क्षेत्र में नवीन दृष्टिकोण प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

1.वाल्मीकि रामायण में वर्णित बाल शिक्षा, चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्य (सत्य, धर्म, करुणा, अनुशासन, सेवा) की स्पष्ट व्याख्या।

2.रामायण में निहित सामाजिक और नैतिक संस्कारों (सम्मान, आदर, कर्तव्य, त्याग) का वर्गीकरण और शिक्षा में उपयोग की रूपरेखा।

3.बाल शिक्षा और संस्कार निर्माण के लिए रामायण आधारित शिक्षण पद्धति और मूल्य शिक्षा के आधुनिक प्रयोग।

4.विद्यालयों, शिक्षक प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम विकास में रामायण के शिक्षा तत्वों का समावेश।

5.रामायण आधारित शिक्षा से बच्चों में आदर्श व्यवहार, सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक मूल्यों का विकास।

6.भारतीय शिक्षा और संस्कार प्रणाली में रामायण के योगदान को उजागर करना।

7.भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए रामायण में बाल शिक्षा और संस्कार निर्माण पर सुसंगत संदर्भ और सिद्धांत उपलब्ध कराना।

8.शोध का सीमांकन :

वाल्मीकि रामायण भारतीय संस्कृति, आदर्शों और मानवीय मूल्यों का एक महान स्रोत है। इसमें केवल धार्मिक या पौराणिक कथाएँ ही नहीं, बल्कि जीवन के विविध आयामों–विशेषकर शिक्षा, नैतिकता और संस्कार निर्माण–का गहन चित्रण मिलता है। बालक के समग्र विकास में शिक्षा और संस्कार का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, और रामायण में श्रीराम, लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघ्न के चरित्र के माध्यम से आदर्श बाल शिक्षा और संस्कारों का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

वर्तमान समय में जब शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित होती जा रही है, तब बाल्मीकि रामायण जैसे ग्रंथों में निहित शैक्षिक तत्वों का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करेगा कि किस प्रकार प्राचीन भारतीय परंपरा में बालकों के नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए शिक्षा और संस्कारों का समन्वय किया गया था। जिसका निम्न प्रकार से सीमांकन किया गया है–

1 .अध्ययन केवल बाल शिक्षा और संस्कार निर्माण से संबंधित शैक्षिक तत्वों तक सीमित रहेगा।

2.अन्य विषयों जैसे राजनीति, युद्धनीति, धार्मिक अनुष्ठान आदि का अध्ययन केवल आवश्यक संदर्भ तक ही किया जाएगा।

3.यह शोध केवल वाल्मीकि रामायण तक सीमित रहेगा।

अन्य रामायणों (जैसे रामचरितमानस) या अन्य ग्रंथों को मुख्य अध्ययन में शामिल नहीं किया जाएगा (केवल संदर्भ हेतु सीमित उपयोग संभव है)।

4.अध्ययन मुख्यतः बाल पात्रों एवं उनके बाल्यकाल से संबंधित प्रसंगों पर केंद्रित रहेगा, जैसे–

श्रीराम

लक्ष्मण

भरत

शत्रुघ्न

अन्य पात्रों का उल्लेख केवल शैक्षिक संदर्भ में किया जाएगा।

5.अध्ययन में निम्न शैक्षिक पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

- नैतिक शिक्षा
- सामाजिक व्यवहार एवं अनुशासन
- गुरु–शिष्य संबंध
- पारिवारिक संस्कार
- आधुनिक शैक्षिक सिद्धांतों के साथ तुलनात्मक अध्ययन सीमित स्तर पर किया जाएगा।

6.ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विश्लेषण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

7.कोई क्षेत्रीय सर्वेक्षण (फील्ड स्टडी) या सांख्यिकीय विश्लेषण शामिल नहीं होगा।

9.संदर्भ ग्रंथ सूची : (रेफरेंसेज)

- वाल्मीकि रामायण, गीता प्रेस, गोरखपुर।
- रामचरितमानस, तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर।
- भारतीय शिक्षा का इतिहास, एस.पी. चौबे, विनोद पुस्तक मंदिर।
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, रामनाथ शर्मा, अटलांटिक पब्लिशर्स।
- भारतीय शिक्षा दर्शन, जे.सी. अग्रवाल, शिप्रा प्रकाशन।
- शिक्षा का समाजशास्त्र, एम.एल. गुप्ता, साहित्य भवन।
- भारतीय संस्कृति और शिक्षा, एस.एन. मुखर्जी, विनोद पुस्तक मंदिर।
- शिक्षा मनोविज्ञान, बी.डी. भटनागर, आर. लाल बुक डिपो।
- रामायण में नैतिक मूल्य, महेश कुमार, विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- रामायण का दार्शनिक अध्ययन, शोभा कुमारी, शोध प्रबंध।
- रामायण में शिक्षा दर्शन, धर्मेन्द्र कुमार, शोध प्रबंध।
- आई0 एन0 एफ0 एल0 आई0 बी0 एन0 ई0 टी0 शोधगंगा विभिन्न शोध प्रबंध (ऑनलाइन स्रोत)।